8. वक्तृत्व कला तथा पत्र-लेखन कला

(The Art of Speech and Letter-writting)

एक प्रभावशाली एवं लोक-पसन्द भाषण कर सकना, निजी बातचीत में अपने अभिप्राय को स्पष्ट, संक्षिप्त (To the point), सुरुचिपूर्ण ढंग से बता सकना, अपनी बात के लिए लोगों के मन में उत्सुकता, विश्वास तथा मान्यता (Conviction) का भाव पैदा कर सकना, यह भी एक कला है। मनुष्य यदि कुशल वक्ता हो तो वह लोगों के मन में घर कर लेता है और उन्हें अपना सहयोगी, समर्थक, सहायक अथवा सखा बना लेता है। वह अपने प्रिय वचनों से जन-जन को अपना बनाकर उनसे अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और इस प्रकार जीवन में सुख का प्रबन्ध कर लेता है। इस प्रकार, मनुष्य के वचनों पर बहुत-कुछ निर्भर करता है। यह कहावत ठीक है कि ''यही ढाई इंच की ज़बान मनुष्य को तख्त पर बिठाती है, यही उसे तख्ते पर (फ़ाँसी पर) चढ़ाती है।'' क्योंकि यदि मनुष्य हितवचन तथा प्रिय वचन बोले तो लोग उसे ही शासक अथवा मंत्री-पद के लिए चुनते हैं और यदि वह फूट, अराजकता, उपद्रव, देशद्रोह आदि फैलाने की बात करे तो उसे फाँसी का दण्ड दिया जाता है। किसी मनुष्य की बातचीत दो रूठे हुए व्यक्तियों को भी मिला देती है और अन्य किसी की चुग़ली, निन्दा, अवगुण-वर्णन की आदत, दो दोस्तों में भी द्वेष तथा घृणा पैदा करने का कारण बन जाती है। इसलिए कहा गया है कि ''यही ज़बान कैंची भी है और यही सूई भी है।'' यदि कोई मनुष्य ज्ञानयुक्त, अनुभवपूर्ण, अनमोल वचन बोले तो लोग कहते हैं कि इस मुख से 'लाल बरसते हैं' अथवा 'फूल झड़ते हैं' और यदि कोई मनुष्य कटु, अनीतिपूर्ण, अपमान-सूचक, मिथ्या या विवादपूर्ण वचन कहे तो लोग कहते हैं कि ''इसकी ज़बान तो कुल्हाड़े का काम करती है'' अथवा ''इसके मुख से तो पत्थर बरसते हैं।'' कोई प्रिय एवं मधुर बोल बोलता है तो लोग कहते हैं कि ''यह तो कोकिला अथवा बुलबुल (Nightingale) है'' और यदि कोई अपशब्द, अशिष्ट वचन अथवा व्यर्थ वाक्य कहकर सिर खपाता है तो लोग कहते हैं कि ''यह तो कौआ है।'' अतः किसी ने कहा है—

''कौआ किसका धन हरे, कोयल किसको दे,
मीठी वाणी बोलकर, जग अपना कर ले।''

कौआ और कोयल हैं तो दोनों ही रंग में काले परन्तु दोनों के वचन अलग-अलग हैं। इसलिए एक की उपस्थिति लोगों को भाती है, दूसरे की अखरती है। यही बात मनुष्यों पर भी लागू होती है। फिर, यह भी आप देखते होंगे कि एक मनुष्य अभिमान या क्रोध से बात करता है तो झगड़ा पैदा हो जाता है, मनमुटाव हो जाता है, शान्ति भंग हो जाती है। इतिहास बताता है कि संसार में बहुत-सी लड़ाइयाँ इसलिए हुईं कि लोगों में शब्द-शक्ति का संयम नहीं था। आज घर में, बाज़ार में, देश तथा अन्तर्देशीय क्षेत्र में झगड़े इसलिए हैं कि लोग जो बातचीत करते हैं उसमें स्नेह, सहानुभूति, सौहार्द या भ्रातृत्व की भावना नहीं है बल्कि अभिमान, क्रोध, द्वेष तथा स्वार्थ भरा हुआ है। यदि नम्रता आ जाये तो संसार सुखी हो जाता है। अतः कहा है कि ''एक नम्रता सौ को हरावे'' अथवा 'एक चुप सौ को हरावे।' कहाँ बोलना है, कहाँ नहीं बोलना है, कहाँ कम बोलना है और कहाँ चुप रहना है, यह एक बड़ी सूझ, बड़ी कला, बड़ी साधना है। यदि मनुष्य गम्भीर हो, प्रिय हो और नम्र हो और प्रेमयुक्त हो तो दुश्मन भी दोस्त बन सकते हैं। अतः किसी कवि ने कहा है—

''मुहब्बत से बना लेते हैं अपना दोस्त दुश्मन को,
झुका लेती है आजिज़ी[1] सरकश[2] की गर्दन को।''

पत्र-लेखन कला का महत्त्व

यही बात पत्र-लेखन के बारे में कही जा सकती है। आप देखेंगे कि आज कुशल जन-नायक अथवा विख्यात महात्मा वे हैं जो अच्छा भाषण कर लेते हैं तथा पत्र में भी लोगों के लिए कुछ ऐसा लिख देते हैं कि लोग उन पत्रों को अपने जीवन की अनमोल निधि मानकर उन्हें सुरक्षित रखते हैं। जिन्होंने इस कला को साध लिया है वे अपने पत्र द्वारा मनुष्य के विचारों को मोड़ लेते हैं, उसके संस्कारों को बदल देते हैं, उसे दूर बैठे न जाने किस डोर से चलाते हैं, उसकी मार्ग-प्रदर्शना करते, उसे किसी अच्छे उद्देश्य के लिए प्रेरित करते तथा एक उच्च लक्ष्य के लिए सहयोगी बनाकर उसका सौभाग्य बना देते हैं। जो मनुष्य जितना गुणी, ज्ञानवान, महान् विचारक तथा जन-हितैषी होता है, उसके भाषणों तथा पत्रों से भी उसका पता चलता है। महान् व्यक्तियों के भाषण अथवा पत्र इतिहास को नया मोड़ देने वाले बन जाते हैं तथा उनका प्रभाव लाखों-करोड़ों लोगों पर शताब्दियों तक पड़ता है। गीता भी तो एक भाषण ही है। देखिये तो कितनी शताब्दियों से लोग उसको श्रद्धापूर्वक पढ़ते हैं तथा उसे अपना मार्गदर्शक मानते चले आते हैं। इन्दिरा गाँधी का राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में जो स्थान था, उसका एक निमित्त कारण उसके पिता पंडित नेहरु जी द्वारा लिखे गये पत्र थे।

फिर, व्यवहार क्षेत्र में आप देखेंगे कि जो व्यक्ति दूसरों को अपनी बात जँचा देना, मनवा (convince) लेना जानता है, उसके कई कार्य बन जाते हैं। जो अपनी बात को दूसरों के सामने स्पष्ट रूप से नहीं रख पाता, अपने ध्येय या अभिप्राय का महत्त्व, अपनी वस्तु का मूल्य, अपने आशय की यथार्थता प्रगट नहीं कर पाता, वह जगह-जगह असफल होता है। इसी प्रकार, जो अपना आवेदन-पत्र (application), अपना प्रस्ताव, अपना निजी पत्र ठीक बना पाता है, उसका कार्य सिद्ध हो जाता है। अतः एक अच्छा वक्ता (Orator) होना तथा पत्र-लेखन में निष्णात (Master in the Art of Letter-writting) होना, जीवन की सफलता का एक बहुत बड़ा साधन है, महान् कार्य कर सकने में बहुत सहायक है तथा स्वयं अपने विकास का द्योतक भी है और साधन भी। इसलिए जीवन की महानता में मन तथा कर्म के अतिरिक्त वचन को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। क्योंकि मनुष्य का बहुत-सा कर्म-खाता तथा संस्कार-खाता उसके वचनों से बनता है।

पत्र-लेखन कला के लिए आवश्यक गुण

ध्यान देने पर आप इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि इस कला से सम्पन्न बनने के लिए इन गुणों का होना ज़रूरी है— (1) मधुरता (2) सरलता (3) ओज (4) रमणीकता (5) नम्रता (6) गम्भीरता (7) सहृदयता (8) सत्यता अथवा सफ़ाई तथा सच्चाई (9) धैर्य (10) ज्ञान एवं विचारशीलता (11) निश्चय (12) स्नेह, अपनत्व एवं हित-भावना (13) उत्साह और उल्लास (14) दूरदर्शिता।

जो मनुष्य मधुर बोलता है, लोग उसके वचनों को सुनना पसन्द करते हैं। जो सरल स्वभाव से बातचीत करता है, लोग उस पर विश्वास करते हैं तथा उससे प्यार भी करते हैं। जिसकी वाणी में ओज होता है, उससे लोग प्रभावित होते हैं और उसकी बात उन्हें याद हो जाती है तथा प्रेरित करती है। रमणीकता एक ऐसा गुण है जिस द्वारा मनुष्य दूसरों के मन को प्रसन्न करके, उनके मन (Mood) को ठीक करके उनका समर्थन अथवा अनुमोदन प्राप्त कर लेता है अथवा उन्हें हँसाकर अपनी बात को रसीला बना लेता है। नम्रता वाले मनुष्य के आगे लोग भी झुकते हैं तथा उसे महान् मानते हैं। गम्भीरता वाले मनुष्य का प्रभाव पड़ता है और लोग उससे अपने मन की बात कहने को भी तैयार होते हैं। जिसमें सहृदयता हो, उसकी बात भली लगती है, हृदय को स्पर्श करती है तथा शुष्क नहीं मालूम होती। जिस मनुष्य के वचनों में सच्चाई और सफ़ाई होती है, लोग उसकी बात को मूल्य देते हैं। जो धैर्य से और बात को तोलकर अर्थात् सोच-विचार कर बात करता है, वह बहुत बोलने से छूट जाता है, बहुत झगड़ों से बच जाता है और सभी पर उसकी शीतलता, सहनशीलता तथा हिम्मत का प्रभाव पड़ता है। जिसकी बातचीत अथवा भाषण में ज्ञान भरा हो, नवीन, गहरे, अनमोल तथा उच्च विचार भरे हों, लोग उसे बहुत समझदार, तजुर्बेकार तथा विचार-कुशल मानते हैं। वे उससे ही राय-सलाह लेते तथा उसका नेतृत्व स्वीकार करते हैं। जो मनुष्य निश्चयपूर्वक बात करता है, उसकी बात में स्वाभाविक तौर पर बल एवं ओज होता है और जो स्नेह तथा आत्मीयता से वचन कहता है, उसके वचन सबके मन में घर करते, बुद्धि में धारण हो जाते तथा प्रेरित करते हैं। पुनश्च, जिसके अपने मन में उत्साह और उल्लास हो वही दूसरों में भी जान डाल सकता है, उन्हें ऊँचा उठा सकता है और जो दूरन्देश हो, उसकी बात का ही महत्त्व होता है। इस प्रकार, ये सभी गुण जिसमें हों, वही इस कला का स्वामी होता है।

स्पष्ट है कि ये सभी गुण योगाभ्यास द्वारा ही आ सकते हैं। क्योंकि निश्चय तो योग की नींव ही है, दूसरों के प्रति हित-भावना भी 'शिव' अर्थात् कल्याणकारी पिता परमात्मा को याद करने से ही आयेगी और उस सच्चे साहिब की स्मृति से मन में सरलता, सफ़ाई और सच्चाई के गुण भी धारण होंगे तथा बोल में शक्ति और ओज अथवा जौहर भी भरेगा। अतः मनुष्य को चाहिये कि परमात्मा से योगयुक्त हो। तभी तो कहा गया है कि ''परमात्मा की कृपा से गूँगा भी बोलने लग जाता है।''

***